Journal of Advances in Science and Technology
Vol. 16, Issue No. 1, March-2019, ISSN 2230-9659

उदय प्रकाश की कहानियों का उल्लेख

Priyanka Jaiswal[1]* Dr. Sanju Jha[2]

[1] Ph.D. Scholar, Hindi Department, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur

[2] Head of Department

सार – *उदय प्रकाश की कहानियों में 'नेलकटर' सबसे ज़्यादा पसंद है. इसके बाद 'छप्पन तोले का करधन', 'तिरिछ' और 'अपराध'. यूं उनकी और भी कहानियां मेरी पसंदीदा कहानियों में हैं, लेकिन इन तीन कहानियों में भारतीय समाज में मां, पिता, भाई, बुआ, चाचा, दादी और दादा के जो चित्र हैं, उनके आधार पर मैं एक पाठक की हैसियत से कुछ कहने की कोशिश करूंगा. सभी कहानियां मानवीय संबंधों की कहानियां होती हैं. लेकिन मनुष्य के तौर पर हमारा पहला संबंध अपने परिवार के सदस्यों से ही बनता है जो हमारे बनने की दिशा तय करता है कि हम आगे जाकर क्या और कैसे बनेंगे.*

----------X----------

भूमिका

इस कहानी में पिता के लिए पुत्र की जो गहरी बेचैनी है वह कदम-कदम पर दिखाई देती है. आरंभ से ही पुत्र कहता है कि पूरा परिवार कोशिश करता कि उन्हें कम से कम बोलना पड़े. क्योंकि वे जिस किले में कैद हैं, वहां से आने में उन्हें तकलीफ ना हो. अपना एकमात्र घर खो देने के भय का जो किला है, वह इन्हीं तिरिछों के कारण निर्मित हुआ है. और जब पिता की तमाम यातनाओं को याद करता हुआ पुत्र आखिरी वाक्य में एक सवाल करता है कि 'मुझे आखिरकार अब तिरिछ का सपना क्यों नहीं आता?' तो लगता है कि जैसे पुत्र ने पिता के चौबीस घंटों में इतने किस्म के तिरिछों को देख लिया है कि अब तिरिछ स्वप्न नहीं हकीकत है और जो चीज हकीकत में घटित हो जाती है, वह फिर स्वप्न में नहीं आती.

इस कहानी में जो एकमात्र घर को खो देने का भय है, वह हमारे ग्रामीण-आदिवासी भारत की सबसे क्रूर सच्चाइयों में से एक है. अपनी जगह से विस्थापित होने का भय, अपने गांव, जंगल से विस्थापित होकर शहर के तिरिछों के बीच पल-पल काटे जाने का भय यानी विस्थापन से उपजे दर्द और तकलीफों का एक अंतहीन सिलसिला. जहां अदालत का रास्ता कोई नहीं बताता, प्यासे को पानी तक नहीं पिलाता, सम्मानित ग्रामीण को सिर्फ उसकी भाषा और भाव-भंगिमा तथा वेशभूषा के आधार पर संदेह की नजरों से देखा जाता है और जिस अदालत में न्याय के लिए इंसान जाता है, वहां पहुंच ही नहीं पाता, यानी वह अपमान और तिरस्कार के अंतहीन दौरों से गुजरकर न्याय की प्रतीक्षा में मरने को अभिशप्त है.

पारिवारिक संबंधों की एक बेहद मार्मिक कहानी है 'छप्पन तोले का करधन', जो अपनी व्याप्ति में जितनी पारिवारिक लगती है उतनी ही हमारे देश के नवउदारवादी दौर की पूर्वपीठिका के रूप में एक राजनैतिक कहानी भी है. यहां जो घर है वह बेहद जर्जर है जिसमें, 'छप्पर की हर लकड़ी में, हर मयार, बीम और बड़ेरी में घुन के कीड़े लगे थे, जो दिन भर सफेद बुरादा नीचे गिराते रहते थे.' और इतना ही नहीं, 'घर की दीवारें भीतर-भीतर खोखली हो चुकी हैं और वहां पर एक दूसरा ही जीवन और संसार चल रहा है. यह संसार चूहों, कई रंगों के विचित्र कीड़ों और ऐसे अदृश्य प्राणियों का संसार था, जिन्हें हम कभी नहीं देख पात थे. वहां का अपना अलग ही नियम रहा होगा. हमारा बाहर का संसार, उस दूसरे संसार के लिए खाद और हवा की तरह था. हम सब घर के खत्म हो जाने के बारे में जानते थे. यह कभी भी अचानक चुक सकता था.' इस घर को आप यह कहानी लिखे जाने के दौर के संदर्भ में देखेंगे तो आपको इसमें पूरा देश-काल दिखाई देगा. यह कहानी 1984 में लिखी गई थी. यही वह समय था जब सामंतवाद आखिरी सांसें ले रहा था और बड़े से बड़े सामंत सड़कों पर आ गये थे.

यह कहानी जितनी एक सामंती परिवार के पतनशील दौर की कहानी है उतनी ही देश में हो रहे परिवर्तनों की भी है. दीवारों के भीतर चल रहा वो अज्ञात संसार उन तमाम घृणित लोगों की ओर इशारा करता है जो देश को खोखला कर रहे थे. इंदिरा

www.ignited.in

गांधी की हत्या के बाद राजीव गांधी के उदय होने का समय था यह, जिसमें पूंजीपतियों की खास दिलचस्पी थी कि देश का नया नेतृत्व शायद उनके लिए बहुत से दरवाजे खोल देगा. लेकिन कहानी में इसे दूसरे स्तरों पर महसूस किया जा सकता है. यह एक नष्ट होते घर की कहानी है, जिसमें एक अच्छा खासा समृद्ध परिवार अंग्रेजों से दुश्मनी मोल ले लेने के कारण सब कुछ गंवा बैठा. जहां उन दो बेटों को जो राज कर सकते थे, मामूली नौकरियां करनी पड़ती हैं और उनकी विधवा बहन को वापस पीहर लौटना पड़ता है. इस घर में चार स्त्रियां हैं जिनके कार्यकलाप को एक बालक देखता रहता है और उसी के मुंह से यह मार्मिक कहानी बयां की गई है. बच्चे की सारी बालसुलभ जिज्ञासाएं और उसकी उत्सुकताएं अत्यंत सहज ढंग से पूरी कहानी को भारतीय आख्यान परंपरा में महत्वपूर्ण बनाती हैं.

उदय प्रकाश की कहानियों का उल्लेख

सामंतवाद के पतनकाल में किस तरह हमारे पारिवारिक संबंध बदल रहे थे, यह भी इस कहानी में स्पष्ट देखा जा सकता है. इस कहानी की दादी हमें सीधे प्रेमचंद की बूढ़ी काकी से जोड़ देती है. लेकिन प्रेमचंद के यहां बूढ़ी काकी का संताप दूसरा था, लेकिन घर के बुजुर्गों की हालत लगता है प्रेमचंद के काल से ही निरंतर गिरती चली गई है. एक समाप्त होता हुआ घर है, जिसे बचाने के लिए एकमात्र रास्ता है वह छप्पन तोले का करधन, जो दादी के पास बताया जाता है. लेकिन वह करधन कहानी खत्म होने तक नहीं मिलता है. यहां भी करधन एक मेटाफर की तरह है, जिसके मिलने से ही जैसे सबके दिन बदल जाएंगे. दाने-दाने को मोहताज एक परिवार की आखिरी आस है वह करधन, जिसका कहीं अता-पता नहीं, जिसके लिए घर को कई बार खोद डाला गया, बूढ़ी दादी से उसका पता करने के सारे जतन कर लिए गये. दादी भी जैसे पतन होते सामंतवाद की एक प्रतीक बन जाती है, जिसे खत्म कर देने की परिवार की सारी कोशिशें दम तोड़ती जाती हैं, लेकिन वह अपनी जर्जर अवस्था में भी बचे-खुचे सामंती अवशेषों की तरह जीवित रहती है.

सामंती समाज के पतनशील दौर के बारे में हमारी जितनी जानकारियां हैं वे इस कहानी में रेशा-रेशा सामने आती जाती हैं. दादा के प्राचीन गौरव की गाथा घर में खूब सुनाई जाती है, लेकिन उसकी सच्चाइयां संदिग्ध हैं. हमने तो राजस्थान में ऐसी पारिवारिक गाथाएं बहुत सुनी हैं और इस कहानी के लिखे जाने के दौर में सामंती परिवारों की महिलाओं को दूसरों के घरों में नौकरानी जैसे काम भी करते देखा है. लेकिन यह कहानी उस हालत में पहुंचने से ठीक पहले की कहानी है, जहां एक आखिरी आस बची हुई है. वैसे भी सामान्य तौर पर हम देखते आये हैं कि घरों में बुजुर्गों के पास कोई अज्ञात खजाना होने की बातें चलती आई हैं. पुराने जमाने में लोग चोरों आदि से बचाने के लिए अपनी कीमती चीजें घरों में गाड़ देते थे. ऐसे गड़े हुए खजाने की कहानी से दादी जैसी कई महिलाएं अपना बुढ़ापा कुशलता से काट लेती हैं. लेकिन इस कहानी में बुआ, मां और चाची का दादी के प्रति जो व्यवहार है वह बहुत चकित कर देने वाला है. आपको ऐसी महिलाएं जीवन में शायद कम ही देखने को मिलें. लेकिन आप उस परिवार की हालत देखेंगे तो अनुमान लगा सकते हैं कि यह क्यों है. एक पिता ही हैं, जो दादी के प्रति नर्मदिल हैं, जबकि दादी की अपनी बेटी यानी बुआ तक का व्यवहार बहुत दहला देने वाला है. चाचा कहानी में आते हैं लेकिन उनकी उपस्थिति नहीं होती, बस उनका जिक्र होता है. ऐसा लगता है जैसे चाचा गोहाटी में कहीं बंधुआ मजदूर जैसी हैसियत में हैं, जो कभी पचास रुपये का मनीऑर्डर भेज देते हैं. हालांकि उनके बारे में प्रचलित लोकविश्वास के अनुसार पूर्व की जादू-टोना कर अपने वश में कर लेने वाली किसी महिला का संबंध बताया जाता है. और यह भी कि चाची के कोई बच्चा नहीं हुआ, जिसके कारण चाचा नहीं आते, जबकि पिता आते रहते हैं.

हालांकि उदय प्रकाश के जेहन में इस कहानी का कोई राजनैतिक आशय संभवत: नहीं रहा होगा, लेकिन अगर इस तरह की कोशिश में इस कहानी के पात्रों के व्यवहार को आप देश के हालात पर लागू करके देखेंगे तो इसके अर्थ कई स्तरों पर खुलेंगे. लाइसेंस और परमिट के उस दौर में दादी को आप सरकार के तौर पर देखें और पात्रों को पूंजीपतियों के रूप में. और करधन फिर एक मेटाफर के तौर पर प्रकट होगा, यानी जो कुछ बचा है वह हमें दे दो, तो हमारे भी दिन सुधरें और घर के भी यानी देश के भी. इसे हमने 1990 के बाद शुरु हुए आर्थिक उदारीकरण में बहुत साफ तौर पर देखा है जब नवरत्न कंपनियों से लेकर तमाम सार्वजनिक उपक्रम पूंजीपतियों के हवाले कर दिये गये. हमने राजस्थान में देखा कि ढहते हुए सामंतवाद के दौर में जर्जर होते सामंती गढ़-किलों को हेरिटेज के नाम पर सरकार और बैंकों से लोन दिलवाकर होटलों में बदला गया. और यह भी सामंती परिवार से संबंध रखने वाले मुख्यमंत्री स्व. भैंरो सिंह शेखावत की ही दृष्टि रही थी.

उदय प्रकाश के लेखन में एक बच्चे की उपस्थिति इतनी गहरी है कि कई बार लगता है कि उनकी कहानियां उस बच्चे की मानसिकता से ही रची गई हैं, जो बेहद संवेदनशील है. दो भाइयों को लेकर हिंदी में बहुत-सी कहानियां लिखी गई हैं और प्रेमचंद की 'बड़े भाई साहब' तो अद्भुत है ही. लेकिन उदय प्रकाश की कहानी 'अपराध' मेरे खयाल से दो भाइयों के आपसी प्रेम की सबसे मार्मिक कहानियों में से एक है. ऐसी कोई दूसरी कहानी मैंने नहीं पढ़ी है. पोलियोग्रस्त अपाहिज और छह साल

www.ignited.in

बड़े भाई के साथ भ्रातृत्व भाव की यह कहानी छोटे भाई का बयान है. बड़ा भाई हमेशा छोटे के साथ रहता है और उसे बहुत स्नेह करता है. लेकिन एक दिन खेल में बड़े ने छोटे की जो उपेक्षा की उसका नतीजा यह हुआ कि छोटे ने गलती से खुद के सिर में चोट लगा ली और घर पर मां को बताया कि बड़े भाई ने मारा है. इस पर पिता बड़े भाई की बुरी तरह पिटाई करते हैं और बड़ा भाई पिटते हुए अपेक्षा करता है कि छोटा भाई सच बोल दे. लेकिन यह नहीं होता. बरसों पुरानी बचपन की इस घटना के अपराधबोध से ग्रस्त छोटा भाई सजा भुगतना चाहता है, माफी मांगना चाहता है, लेकिन बड़े भाई को याद ही नहीं कि ऐसा कुछ हुआ भी था. इस कहानी की अंतिम पंक्तियां इसे एक शोकांतिका में बदल देती हैं.

'तो इस अपराध के लिए मुझे क्षमा कौन कर सकता है? क्या यह ऐसा अपराध नहीं है जिसके बारे लिया गया जो निर्णय था, वह गलत और अन्यायपूर्ण था, लेकिन जिसे अब बदला नहीं जा सकता?

और क्या यह ऐसा अपराध नहीं है, जिसे कभी भी क्षमा नहीं किया जा सकता? क्योंकि इससे मुक्ति अब असंभव हो चुकी है.'

निष्कर्ष

उदय प्रकाश की संवेदनाएं इन चार कहानियों में जितनी पारिवारिक और निजी-आत्मीय ढंग से व्यक्त हुई है, वह उनके समूचे रचनाकार का कदाचित मूलसूत्र है. विस्थापन एक ऐसी विकट सच्चाई है कि वह उदय प्रकाश की कहानियों में निरंतर विद्यमान रहती है. हम संबंधों में भी विस्थापित होते हैं, क्योंकि बहुत से कारणों से हमें नये संबंध बनाने होते हैं और समय के साथ पुराने संबंध बदलते जाते हैं. लेकिन पारिवारिक संबंध हमें अंतिम समय तक याद रहते हैं और उनका विस्थापन हमें लगातार कचोटता रहता है. इसीलिये 'अपराध' कहानी की अंतिम पंक्ति ही हमें बताती है कि संबंधों से मुक्ति असंभव हो चुकी हैं. मुझे लगता है कि उदय प्रकाश ने 'नेलकटर' के अंत में जो बात चीजों के बारे में कही है, वह उनकी कहानियों में संबंधों के बारे में भी उतनी ही सच है. 'क्योंकि चीजें कभी खोती नहीं हैं. वे तो रहती ही हैं. अपने पूरे अस्तित्व और वजन के साथ. सिर्फ हम उनकी वह जगह भूल जाते हैं.'

संदर्भ

https://www.hindisamay.com/

www.pustak.org

www.kopykitab.com

Corresponding Author

Priyanka Jaiswal*

Ph.D. Scholar, Hindi Department, Maharaj Vinayak Global University, Jaipur